स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

गर्मियों का मेहमान पतरिंगा

गर्मियों में भी आते हैं प्रवासी पक्षी

प्रमोद भार्गव

ज़्यादातर लोगों की यही धारणा है कि प्रवासी पक्षी केवल जाड़ों के ही मेहमान हैं। तथ्य यह है कि ये परिदें जाड़ों में तो आते ही हैं, मगर कुछ पक्षी गर्मियों में भी हज़ारों किलोमीटर की यात्रा कर राजस्थान के रेगिस्तान की तपती रेत में घोंसले बनाते हैं।

अफ्रीका से उड़कर थार मरुस्थल में आने वाले इन परिंदों में एक है, पतरिंगा। लंबी चोंच वाली इस चिड़िया को अंग्रेज़ी में 'ब्लू चीक्ड बी ईटर' कहते हैं। इस चिड़िया की लंबाई एक फीट तक होती है। लाखों की संख्या में ये चिड़ियाएं थार मरुस्थल में आकर इंदिरा गांधी नहर के दोनों किनारों पर पड़ी मिट्टी में घोंसला बनाती हैं और अण्डे देती हैं। यहां पाए जाने वाले कीड़े-मकोड़े इनका आहार हैं।

राजस्थान के पक्षी विज्ञानी हरकीरत सिंह ने इस तथ्य को उजागर किया है कि गर्मियों में भी प्रवासी पक्षी आते हैं। हरकीरत सिंह ने गर्मियों में आने वाले पक्षियों की 29 प्रजातियों की पहचान भी की है। इनमें 28 प्रजातियां भारतीय हैं जो देश के विभिन्न हिस्सों से गर्मियां बिताने यहां आती हैं और एक विदेशी प्रजाति पुतरिंगा पूर्वी अफ्रीका से यहां आती है। अभी भी कई ऐसे पक्षी हैं जिनकी पहचान नहीं की जा सकी है। वैसे राजस्थान में करीब तेरह सौ प्रजातियों के प्रवासी पक्षी आते हैं। लेकिन इन पक्षियों में से केवल 75-80 पक्षियों की ही पहचान अब तक की जा सकी है।

इंदिरा गांधी नहर के अलावा जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर और गंगानगर में भी हज़ारों की तादाद में पक्षी आते हैं। इन्हें गर्मी भाती है। ये परिंदे नहरों के किनारों पर ही प्रजनन क्रिया संपन्न करते हैं और जाड़ों की शुरुआत होते ही सितंबर-अक्टूबर में अपने मूल आवासों की ओर लौट जाते हैं और मार्च-अप्रैल से इनके आने का सिलसिला फिर शुरू हो जाता है।

कुछ साल पहले राजस्थान के बहुत बड़े भूभाग में टिड्डी दलों ने बड़ी तादाद में हमला बोला था और फसलों के लिए संकट बन गए थे। इस संकट से उबरने में सरकारी तंत्र पूरी तरह नाकाम रहा था, मगर बहुत बड़ी मात्रा में इन प्रवासी पक्षियों ने टिड्डियों को आहार बनाकर इनका सफाया किया था। इस काम में पतरिंगा ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। आकार बड़ा होने और लंबी चोंच होने के कारण इन चिड़ियों ने टिड्डियों का खूब भोजन किया।

बहरहाल ऐसा नहीं है कि गर्मियों में केवल थार मरुस्थल में ही प्रवासी पक्षी आते हों, गुजरात के रण क्षेत्र में भी कुछ पक्षी आते होंगे। हो सकता है कुछ और स्थलों पर भी पक्षी पड़ाव डालते हों। इसलिए गर्मियों में आने वाले प्रवासी पक्षियों पर विस्तृत अध्ययन की अभी ज़रूरत है। इस दिशा में पर्यावरण प्रेमियों को कदम उठाना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी